SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

संजीव के उपन्यासों में चित्रित नारी संघर्ष

प्रा. मच्छिंद्र भगवान कुंभार
सहाय्यक प्राध्यापक, मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगाव जि. सांगली

आधुनिक काल में उपन्यास हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। इसी साहित्यिक विधा के माध्यम से उपन्यासकार अपनी जीवनानुभूति को कल्पना के माध्यम से जीवन की समग्रता को उजागर करता है। आज साहित्य में दलित विमर्श, मुस्लिम विमर्श, पुरूष विमर्श आदि विमर्शों की बातें हो रही है। इसलिए उपन्यासकार अपनी रचना के लिए नए–नए विषय चुनता है। इसी विमर्शों में शोषण एवं संघर्ष की बात निरंतर हो रही है। यह शोषण और संघर्ष ऐसे दो शब्द जिसके आस–पास ही साहित्य परिक्रमा करता रहता है। शोषण एवं संघर्ष को लेकर लिखनेवाले अनेक रचनाकार हिंदी साहित्य में पाए जाते हैं। इन्हीं रचनाकारों में से एक रचनाकार है – संजीव। संजीव का पूरा साहित्य ही शोषण की खिलाफ उठी चिनगारी है, जो शोषणरूपी होम को बुझाने के लिए मानव को संघर्ष के लिए खड़ा करती है। संजीव का उपन्यास संसार काफी बड़ा है। अभी तक उन्होंने लगभग चौदह उपन्यासों का सृजन किया है। हर उपन्यास का विषय अलग–अलग है। परंतु शोषण और उसके खिलाफ संघर्ष का वह रूप हर उपन्यास में भारी मात्रा में दिखाई देता है। संजीव ने अपने उपन्यासों में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। 'किशनगढ की अहेरी' उपन्यास की चांदनी, 'धार' उपन्यास की मैना, 'सर्कस' उपन्यास की झरना, 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास की मलारी, 'रह गई दिशाएँइसी पार' उपन्यास की बेला, 'फाँस' उपन्यास की शकुंतला और कलावती ऐसी नारीयाँ है जो शोषण के खिलाफ निरंतर संघर्ष करती है और अपने अस्तित्व को बनाए रखने की कोशिश करती है।

आज के आधुनिक युग में हम देखते हैं कि एक ओर नारी इतनी प्रगत हुई है कि पूरा देश सँभलने में वह समर्थ है। तो दूसरी ओर उसके सामने सुरक्षा और अस्तित्व के प्रश्न आज भी हैं। आज अनेक महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार बनती है। जिसमें अधिकतर महिलाएँ निरक्षर है। इतना कुछ होने के बावजूद आज भी भारतीय महिलाएँ परंपरा में जकड़ी हुई है। दहेज के लिए प्रताड़ित करना, खुले आम स्त्री का बलात्कार, भ्रूण हत्या, जात पंचायत द्वारा शोषित किया जाना आदि अत्याचार स्त्री पर आज भी हो रहें हैं। इस स्थिति पर प्रकाश डालतें

हुए डॉ. हुकूमचंद राजपाल कहते हैं कि ''विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा का जहाँ विकास हुआ है वहाँ आदमी आदमी से दूर होता गया। वैज्ञानिकता एवं बौद्धिकता के अतिवादी युग में मानवीय संबंधों में दरारे डाल दी है। पारिवारिक संबंध अब यांत्रिक रूप धारण कर चुके हैं। नारी समाज में जहाँ समानता पाने लगी है वहाँ नित्य नवविवाहित महिलाओं पर अत्याचार किए जा रहें है। संबंधों में आत्मीयता का कोई महत्व नहीं रहा है।''[1]

अतः आज की नारी एक ओर शोषण, अन्याय और अत्याचार से पीड़ित है। तो दूसरी ओर वह शोषण अन्याय–अत्याचार का विरोध कर नित्य संघर्षशील भी दिखाई देती है। इसी की अभिव्यक्ति संजीव के उपनयासों में प्रमुखता से देखी जा सकती है।

संजीव का उपन्यास 'किशनगढ के अहेरी' किशनगढ नामक गाँव के शोषण की दास्तान है। जिसमें उच्चवर्ग अपने शोषक एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मध्यवर्ग और निम्नवर्ग का शोषण करते हैं। इसके खिलाफ उपन्यास का नायक जय और नायिका चांदनी विद्रोह करते हैं। जय की हत्या के बार चांदनी स्वयं पर और लोगों पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार और शोषण का विरोध करती है। उपन्यास के ज्योतिष बाबा, रूपई, ब्रम्हाचारी बाबा, इनरपतिसिंह, इकबाल सिंह जैसे लोगनिम्नवर्ग का शोषण करते हैं। विवेच्य उपन्यास में चांदनी, राधा, सोना, रतिया आदि नारियों का शारीरिक और मानसिक शोषण दिखाई देता है। शोषण की यह परंपरा चलती रहती है। परंतु चांदनी जैसी नारियाँ इस शोषण के खिलाफ संघर्ष करती है। वह अपने मरे हुए पति जय का शोषण मुक्ति का संघर्ष जारी रखती है। जय की अधूरी लडाई को वह पूरा करना चाहती है। उपन्यास में चांदनी कहती है ''अब हममें से कोई नहीं जाएगा कहीं। उसके पास साधन है। करते रहे दमन, मगर हम नहीं रूकनेवाले। हमारी लड़ाई अब चल निकली है, हमारी मौत के बाद भी नहीं रूक सकती।''[2]इससे स्पष्ट होता है कि चांदनी शोषण के खिलाफ विद्रोह करती है और अपने संघर्ष को जारी रखती है।

'सर्कस' एक अनोखा उपन्यास है। उपेक्षित कलाकारों की व्यथा और व्यवसायिकता के परिदृश्य पर हो रहे शोषण की कथा बुनता यह उपन्यास नारी संघर्ष को भी व्यक्त करता है। उपन्यास में नायिका झरना सर्कस में कलाबाजियाँ दिखाती है। सर्कस मालिक सर्कस में आनेवाली नारियों और लडकियों का हर तरह से शोषण करता है। बचपन से ही सर्कस में कलाबाजियाँ दिखानेवाली झरना का सर्कस मालिकों के द्वारा शोषण होता है। इसलिए अनेक सर्कस कंपनीयॉ बदलती है। परंतु पुरूष वर्चस्व और शोषण की स्थिति वही रहती है। उपन्यास में नायिका झरना, चंद्रा, संधुदी, कामिनी आदि शोषण से पीड़ित नारियाँ संघर्ष करती हुई नजर आती है। उपन्यास की झरना कहती है ''रोटी का टुकडा दिखाकर मुँह में लाठी ठूँस देने का इंतजाम हो रहा है। राहत का अन्न बिचौलियों और सेठों के गोदामों में पड़ा है – मगर आप बोल नहीं सकते। मैं पूछती हूँ, क्या आप जमूरे और दर्शक ही बने रहेंगे ?'' [3]झरना के इस संवाद में काफी संघर्ष विद्रोह दिखाई देता है जो अपने अस्तित्व की लड़ाई का संघर्ष है।

'धार' उपन्यास कोयला ऑचल के आदिवासियों के जीवन संघर्ष की कहानी है। जिसमें पूँजीवादी व्यवस्था, शोषण तंत्र, माफियों की दहशत, आदिवासियों की अभिशप्त जिंदगी नारियों का शोषण एवं संघर्ष आदि का यथार्थ चित्रण है। जिसके केंद्र में आदिवासी नारी पात्र मैनाहै।वह अशिक्षित है परंतु सजग और विद्रोही है। वह आदिवासियों पर हो रहें अन्याय–अत्याचार और शोषण के खिलाफ सचेत है। विवेच्य उपन्यास में नायिका मैना और उसकी माँ पर अन्याय–अत्याचार होता है। जब मैंना काम ढूँढने के लिए महेंद्रबाबू के घर जाती है। तो वहाँ महेंद्रबाबू की पत्नी से उसका झगड़ा होता है। तब उस घर का आदमी रामसिंह मैंना पर अत्याचार करता है। उपन्यास में संजीव लिखतें है कि ''ब्लाउज–पेटीकोट में फिर उठकर भागी मैंना। उसकी साडी परे फेंककर एठकर फिर खदेड़ा रामसिंह ने। थोडी दूर जाते–जाते रामसिंह के हाथ पीछे से ब्लाउज पर पडें। चर्र से फट गया पुराना ब्लाऊज। अब रह गया था सिर्फ कटे पंख सा फटा ब्लाऊज और पेटीकोट ब्लाऊज के बचे अंश को हथेलियों से दबाये भागी चली जा रहीं थी, सरे बजार। ''[4]

इस तरह से महेंद्रबाबू जैसे अन्य लोगों के द्वारा मैना, मैना की माँ और अन्य नारियों पर अन्याय–अत्याचार होता है। उनका शोषण किया जाता है। मैना इसके खिलाफ संघर्ष करती है। वह अन्याय–अत्याचार और शोषण में साथ देनेवाले अपने पति और पिता के खिलाफ भी आवाज उठाती है और अंत तक अपने संघर्ष को जारी रखती है। मैना अन्याय –अत्याचार एवं शोषण से मुक्ति पाने के लिए अविनाश शर्मा से मिलकर सहकारिता के परिप्रेक्ष्य में जनखदान का निर्माण करती है। तब अन्यायी शोषक महेंद्रबाबू जनखदान से निकला कोयला हड़प करना चाहता है। इस अन्याय के खिलाफ मैना विद्रोह करती है। मैना विद्रोह स्वर में कहती है कि ''मर–मर के निकला हम, और अब हो गया तुमरा बाप का ? खबरदार जो हाथ लगाया।''

''साला गुण्डा सब! देख–देख के छाती पे साँप लोटता सब का कि मैना अकेले कइसे खाता–पिता, कॉय नई हमरा गोड़ के जीचे रहता। नई रहगा रे भँड़वा लोग नई रहगा, तुमरा धौंस का नीचे, चाहे भूखा मर जाय।''[5]इस कथन से प्रमाणित होता है कि मैना अपने और आदिवासियों पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार और शोषण के खिलाफ धार बनकर संघर्ष करती है।

'रह गई दिशाएँ इसी पार' संजीव का वैज्ञानिक उपन्यास है। उपन्यास में बिस्नु बिजारिया एक मांस विक्रेता और बड़ा उद्योगशील व्यापारी है। प्रस्तुत उपन्यास में वह मानव का हर तरह से शोषण करता है। नारी जाति भी इसके लिए अपवाद नहीं है। एलिस, कैथरिन, करनीदेवी, बेला, लारा, मधु, नानी, कमल, तेल्लमा, जूली, शुभा आदि नारीयों का चित्रण उपन्यास में हुआ है। बिस्नु अपना व्यापार करते समय नारियों का शोषण करता है। विवेच्य उपन्यास में बेला ऐसी नारी पात्र है जो अन्याय–अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करती है। केंदूली

में भी बेला समुद्र में मछली पकड़ने के लिए आए उद्योगपतियों के ट्रालरों से मुकाबला करती हुई अपने अस्तित्व की लडाई लडती है। अपने जीवन में भी वह केंदुली से–कोच्चि–बंगाल–केरल की यात्रा करती है। अनेक अन्यायों का सामना भी करती है। वह ऐसी कंपनी में काम करती थी, जहाँ मछलियों को काटकर उसे डिब्बे में भरकर एक्सपोर्ट किया जाता था।वहीं पर सभी लड़कियाँ काम करती है। जो पढ़ी–लिखी नहीं है, परिवार से तंग आकर यहाँ काम करने के लिए मजबूर है। जिसका लाभ बिस्नु बिजारिया जैसे शोषक उठाते हैं। कंपनी मालिक बिस्नु बिजारिया जैसे सेठ लोग नारियों का हर तरह से शोषण करते हैं। बेला जिस मछली प्रोसेसिंग में काम करती है, वह कंपनी लड़कियों से गंदे वातावरण, बर्फिली मछलियों में और बिना किसी सुरक्षित साधनों से काम करवाती है। उन्हें काम की तुलना में कम वेतन देकर उनका आर्थिक शोषण भी किया जाता है। विवेच्य उपन्यास में संजीव ऐसी शोषित नारी का चित्रण करते हुए लिखतें है कि ''सुपरवाइजर पानी में छप–छप करता चल रहा है। उसके पैरों में वॉटरप्रुफ है, मौजे है, मगर पीलिंग पर बैठी लड़कियों के पास तो कुछ भी नहीं। बर्फ सी ठंडी कुठ आयी मछलियाँ, छीलो तो लगता है बर्फ छील रहें है। ठंडक काट रहीं है पावों को, हाथों को, उंगलियों को। अकडे जा रहें है अंग–अंग। लेकिन रूकना संभव नहीं। ''[6]

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है मछली प्रोसेसिंग कंपनी में काम करनेवाली नारियों का कंपनी मालिक शारीरिक और आर्थिक शोषण करते हैं। विवेच्य उपन्यास में कमला और शुभा जैसी औरतें औरतों का ही आर्थिक शोषण करती है। तभी बेला इस शोषण के विरोध में आवाज उठाती है। एक माह जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी उनकी पगार ठेकेदार के पास जमा होती है। मेहनत करनेवाली नारी को वह पगार नहीं दी जाती। बेला इस अन्याय–अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती है। बेला कहती है कि

''मेरा पेमेंट मुझे चाहिए''
''ट्रेडिशन तो यहीं है कि .....''
''कैसा ट्रेडिशन ? काम हर करें, पेमेन्ट ले कोई दूसरा।''
''तुम शुभा से बात करो''
''तुम शुभा से बात करो, मैं क्यों करूँ ?''
''बट दैट इज आवर ट्रेडिशन ?''
''हेल टू योर ट्रेडिशन''
''उसके अंग्रेजी के तिरस्कार और उसकी भंगिमा देखकर डर गया हेड क्लर्क। ''[7]

उपर्युक्त संवादों से स्पष्ट होता है कि बेला अपने हो रहे आर्थिक शोषण के खिलाफ संघर्ष करती है। अपने हक की कमाई प्राप्त करने के लिए लड़ती है। बाकी काम करनेवाली

लड़कियों को भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत कराती है। उन्हें पढ़ाती है और अन्याय–अत्याचार तथा शोषण के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार करती है। इस तरह से संजीव के उपन्यास'जंगल जहाँ शुरू होता है' में मलारी, बिसराम बहू, 'फाँस' उपन्यास की शकुंतला और कलावती आदि नारीयों के संघर्ष का चित्रणउपन्यास में मिलता है।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि संजीव ने अपने उपन्यासों में नारियों का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यासों में चित्रित चांदनी, झरना, मैंना, बिसराम बहू, बेला, तेलम्मा, कलावती, शकुंतला आदि नारियाँ स्वयं पर और नारी जाति पर होनेवाले अन्याय,अत्याचार और शोषण का विरोध करती है। अन्यायी व्यवस्था और समाज से संघर्ष कर अपने अस्तित्व, अधिकार, आजादी और अस्मिता की लड़ाई शुरू रखती है। जो अन्य नारियों के जीवन में आदर्श खड़ा करती है और उन्हें अन्यायी समाज और व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

संदर्भ ग्रथ :

1. हिंदी साहित्य का आठवाँ दशक– संपा. पुष्पवाल सिंह,पेज नं.103
2. किसनगढ़ की अहेरी–संजीव , पेज नं.165
3. सर्कस–संजीव, पेज नं.142
4. धार–संजीव,पेज नं.69–70
5. धार–संजीव, पेज नं.104
6. रह गई दिशाएँ इसी पार–संजीव, पेज नं.174
7. रह गई दिशाएँ इसी पार–संजीव, पेज नं.179